

वृष्टिनिमित्तो रिरीहि 10, 98, 10. 6, 49, 10. 7, 33, 13. ज्येष्ठे माता सूनवे भागमाद्यादन्वस्य केतमिषितं संवित्रा 2, 38, 5. इषिता दैव्या होतारा भद्रवाच्याय प्रेषिता मानुषः सूक्तवाक्याय ऽत. Br. 4, 8, 3, 10. मनसा वा इषिता वाग्दत्तिं Ait. Br. 2, 5. KENOP. 1. — Vgl. अशेषित, इन्नेषित, देवेषित, पुरुषेषित, मर्त्येषित, युष्मेषित, रज्ञेषित, शुनेषित.

— अन्नु *suchen, aufsuchen, durchsuchen*: अन्वेष्यत्तस्ततः सीतां सर्वे ते R. 4, 47, 1. यावदेनामन्वेष्यामि ऽक. 32, 13. न रत्नमन्वेष्यति मृग्यते हि तत् KUMĀRAS. 5, 45. RAGH. 9, 75. HIT. 123, 13. 113, 8, v. 1. स नदीर्विधिधान् शैलान् — अन्वेष्यन् R. 3, 75, 73. यावदसौ सोमिलको ग्रन्थिमन्वेष्यति (lies: अन्वेष्यति) । तावत्सुवर्णां नास्ति PĀNĪKĀT. 134, 25. med.: मृगमन्वेष्यमाणः (?) HIT. 34, 18. — Vgl. 2. 3. 4 und 5. इष् mit अन्नु.

— अपि med. *nachstreben, nachzukommen suchen*: अस्यं व्रतेष्वपि सोमं इष्यते RV. 9, 69, 1.

— प्र 1) act. med. *forttreiben, antreiben; aussenden*: प्र वाचमिन्डारप्यति RV. 9, 12, 6. 33, 4. प्र ऋभुयो हूतमिव वाचमिष्ये 4, 33, 1. अग्निप्रीडाजपुत्रां मा सुराकारां तवात्तकम् MBH. 4, 455. BHĀṬṬ. 15, 99. शृष्टिवि प्रेषिता वामबाधि प्रति स्तेमिर्नरमाणो वर्सिष्ठः RV. 7, 73, 3. (अपः) आर्षिषेणोन् सृष्टा देवार्पिना प्रेषिताः 10, 98, 6. KENOP. 1. (इषवः) यातुध्यानप्रेषिताः geschleudert ऽत. Br. 7, 4, 1, 29. अस्मत्प्रेषितं zu uns getrieben 6, 3, 2, 3. Vgl. weiter unten das caus. — gerund. प्रैषम् in der Verbindung प्रैषः (oder शोष्ठमिः) प्रैषमिच्छति *er sucht mit Aufforderungen, Rufen aufzutreiben*, d. h. *er sucht aufzutreiben* (wie ein Wild): यज्ञो वै देवेभ्य उदक्रामत्तमिष्ठमिः प्रैषमिच्छन् Ait. Br. 1, 2. यज्ञो तं प्रैषैः प्रैषमिच्छन् 3, 9. ऽत. Br. 3, 9, 3, 28. 13, 1, 4, 1. — 2) act. *auffordern*, insbes. regelmässig gebraucht von der *Aufforderung*, welche der das Opfer leitende Priester an einen andern dabei fungirenden richtet, damit dieser einen Spruch oder eine Handlung beginne. अर्घ्यप्रेषितो मैत्रावरुणः प्रेष्यति प्रैषे होतारं होता यज्ञति ऽच. Br. 3, 2. 1, 5. प्रहस्तिष्ठन्प्रेष्यति Ait. Br. 3, 9. AV. 14, 3, 14. रथतरं गायति प्रेष्यति KĀTJ. ÇR. 4, 9, 6. Das Object, auf welches die Aufforderung geht, steht im acc.: साम प्रेष्यति (*er fordert auf zu einem Sāman mit den Worten*) गाय ब्रूहीति वा KĀTJ. ÇR. 10, 8, 16. शौनःशेषं च प्रेष्यति 15, 6, 1. 20, 3, 1. Ebenso ist auch der häufige imperat. प्रेष्य mit begleitendem acc. oder gen. (P. 2, 3, 61) nicht geradezu durch *bringe dar* zu erklären, sondern als abgekürzte Redeweise aufzufassen für *fordere auf zur Darbringung* (oder *Recitation*). Wo gen. steht, ist dieser partitiver Art; z. B. अग्निषोमयो ह्यगस्य वयो मेदः प्रेष्य ऽत. Br. 3, 8, 2, 27 sind Worte des Adhvarju an den Maitrāvaruṇa: *richte deine Aufforderung* (an den Hotar) *in Betreff der Darbringung von Netz und Fett des Bocks für Agni und Soma*. समिधः प्रेष्यति 3, 8, 1, 4. धानासोमान्प्रस्थितान्प्रेष्य 4, 3, 3, 9. ह्यगानो हविः प्रस्थितं प्रेष्यति 5, 1, 3, 14. Vgl. VĀRTT. zu P. 2, 3, 61. Mit dat. allein: *fordere auf zur Darbringung* (*Recitation*) für einen Gott u. s. w.: अग्नये स्विष्टकृते प्रेष्य ऽत. Br. 3, 8, 3, 34. स्वाकृतिभ्यः प्रेष्य 2, 23. आदित्येभ्यः प्रेष्य 4, 3, 5, 20. Die Bedeutung *bringe dar* kann mittelbar nur dann eintreten, wenn der Maitrāvaruṇa zugleich die Stelle des Hotar versieht: समैत्रावरुणे (पशुसोमादि कर्मणि) प्रेष्यत्याह यज्ञस्थाने KĀTJ. ÇR. 6, 4, 10; vgl. auch Ait. Br. 2, 5. प्रेष्य P. 8, 2, 91. S. auch प्रेष und प्रैष्य. — caus. *प्रेषयति* 1) *schleudern, werfen*: प्रेषयामि मरुवेगमस्त्रमस्या विनाशने R. 3, 33, 46. शरंश्च

— प्रैषयं शाक्वराजाय MBH. 3, 850. प्रैषियद्वात्सः प्रासम् BHĀṬṬ. 15, 77. (die Augen) *richten*: स्निग्धं वीक्षितमन्यतो ऽपि नयने यत्प्रेषयत्या तथा ऽक. 35. ततस्ततः प्रेषितवामलोचना 23. — 2) *schicken, senden, entsenden*: यदर्थं त्वां प्रेषयामि पुरीमितः R. 2, 52, 55. विवशं लक्ष्मणं सीता प्रेषयिष्यति 3, 64, 7. 1, 8, 19. प्रेषयिष्ये तवार्थाय वाह्निं चतुरङ्गिणीम् MBH. 1, 2973. 5920. हूतास्त्वं प्रेषयस्व 2, 1243. प्रेषयामास कौरव्य वारुणं पाण्डवं प्रति 14, 2199. पार्थिव्यः प्रेषयिष्यामि संवयम् 5, 643. प्रेषयिष्ये नृपाय 1, 1735. प्रेषयिष्यति राजा तु कुशलार्थं तवानघे । ब्राह्मणान् R. 1, 17, 28. N. 3, 7. 23, 21. 26, 25. प्रेषितं gesandt H. 1492. INDR. 5, 32. N. 3, 25. 23, 9. R. 3, 64, 8. पित्रा मे प्रेषिता हूता राज्ञाम् 4, 31. ऽक. 29, 12. 93, 2. प्रेषितस्त्वम् गङ्गा गच्छेः oder गच्छ Vop. 25, 22. प्रेषितवत् HIT. 39, 21. *fortschicken, entlassen* KATHĀS. 4, 21. 85. *verbannen*: मा चास्मै प्रेषितं रामम् — भवतः शंसिषुः R. 2, 68, 8. *eine Botschaft Jmd senden, Jmd sagen lassen*: स च मे प्रेषयामास शैवं धनुर्नुत्तमम् — मरुं वै दीपतामिति 1, 71, 17.

— अन्नुप्र caus. *nachsenden, aussenden*: अन्नुप्रेषय वानरान् R. 4, 37, 10. यात्रानुप्रेषितं KATHĀS. 19, 69.

— अग्निप्र *auffordern, befehlen*: देवानामेनं घोरेः क्रूरैः प्रैषैर्भिप्रेष्यामि AV. 16, 7, 2. im liturg. Sinne: तस्मान्नानभिप्रेषितमर्घ्युणा किं चन क्रियते ऽत. Br. 4, 6, 7, 19.

— उपप्र *antreiben*: उप प्रेष्यतं पृषां यो वहाति AV. 18, 2, 53. *auffordern* im liturg. Sinne: अत उपप्रेष्य होतर्हव्या देवेभ्य इत्याहाधुर्ग्नैर्दग्धिरसनद्वाजमिति मैत्रावरुण उपप्रेष्य प्रतिपद्यते Ait. Br. 2, 5; vgl. ऽत. Br. 4, 6, 7, 19. KĀTJ. ÇR. 6, 5, 10. 8, 8, 32.

— निप्र s. पृष्निनिप्रेषित.

— परिप्र caus. *aussenden*: कपिवृषाः परिप्रेषयन् — माहतिम् BHĀṬṬ. 7, 103.

— संप्र *auffordern*, liturg.: तद्दुर्घर्षुर्धुर्वेवान्यानृत्विजः संप्रेष्यत्यथ कस्मदिष एतामसंप्रेषितः प्रतिपद्यते Ait. Br. 6, 2. संप्रेष्यत्येवैतया ऽत. Br. 1, 4, 1, 39. 2, 5, 2, 19. अथ संप्रेष्यति सोमापनकनमाकर 3, 3, 2, 3. 9, 2, 16. सूक्तवाक्या संप्रेषितः ऽच. Br. 1, 9, 10. 3, 6. ज्ञानत्तं संप्रेष्यत्यग्नये समिध्यमानायानुब्रूहीति Nir. 1, 15. KAUC. 16. KĀTJ. ÇR. 21, 3, 34. Vgl. संप्रेष. — caus. *senden, schicken, fortschicken, entlassen*: ततः संप्रेषयामास रत्नानि विविधानि च MBH. 2, 1179. न खल्वेषा मतिर्मरुं यज्ञां संप्रेषयाम्यहम् R. 5, 43, 12. पुत्रं संप्रेष्य दण्डकम् 4, 56, 17. तामथ संप्रेष्य परिग्रहीतुः ऽक. 97. PĀNĪKĀT. 109, 5. संप्रेष्यमाणो नागेन्दो वज्रदत्तेन MBH. 14, 2200. संप्रेषित 1, 3200. 6012. 3, 14716. R. 5, 33, 25. HIT. 93, 17. *Jmd* (gen.) *eine Botschaft senden* MBH. 3, 102.

2. इष्, इहति DĀTUP. 31, 53 (अभोहाये). med. इषणत्; aor. इषत्; partic. इहान्. 1) *in rasche Bewegung setzen, schnellen, schwingen*: वज्रमिहन् RV. 4, 17, 3. चक्रमिषणत्सूर्यस्य 14. 9, 17, 5. SV. II, 6, 1, 3, 3. पूवीरिषश्चरति मधं इहन् ausspritzend RV. 1, 181, 6. *schleudernd treffen*, mit dem acc. 63, 2. med.: इहान् आयुधानि 61, 13. *entfahren, entspringen*: तुभ्यं शुक्रासः शुचयस्तुरण्यवो मेदभूया इषणत् भुर्वण्यपामिषत् भुर्वणि 134, 5. सृतेन दीर्घमिषणत् पृत्तः 4, 23, 9. — 2) *antreiben, erregen; beleben, fördern*: ऊतिभिस्तमिषणो व्युह्रतौ RV. 4, 16, 9. गातुमिहन् 2, 20, 5. अस्मभ्यं विश्वा इषणाः पुरंधीः 4, 22, 10. द्विपाञ्चतुष्पादिहामि यथा सेनामं कृन्न् AV. 8, 8, 14. 15. 11, 5, 1. VS. 31, 22. प्राणा वै देवा धिह्यास्ते हि सत्रा धिय इहति ऽत. Br. 7, 1, 1, 24. 3, 1, 23.